एशिया

एशिया विश्व का विशालतम महाद्वीप होने के साथ-साथ उच्चावच की दृष्टि से अत्यधिक विभिन्नताएं समेटे हुए है। अंटार्कटिका महाद्वीप को अपवाद के रूप में छोड़कर एशिया विश्व का सर्वाधिक ऊँचा महाद्वीप है जिसके धरातल की औसत ऊँचाई समुद्र तल से 960 मीटर है। विश्व का सर्वोच्च शिखर माउण्ट एवरेस्ट (Mount Everest) इसी महाद्वीप में स्थित है जिसकी ऊँचाई 8848 मीटर है। विश्व का सबसे निचला स्थल-मृत सागर निम्न भूमि इस महाद्वीप के पश्चिमी भाग में स्थित है जिसकी समुद्र तल से गहराई लगभग 396 मीटर है। यही नहीं विश्व की गहरी महाद्वीपीय दरार (Trough) बैकल झील के रूप में साइबेरिया क्षेत्र में स्थित है जिसकी समुद्र तल से गहराई 1295 मीटर है। एशिया महाद्वीप का सबसे ऊँचा पठार एशिया के मध्यवर्ती भाग में पामीर की गांठ के रूप में विस्तृत है जिसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 7400 मीटर है। एशिया महाद्वीप का लगभग 26% निम्न मैदानी भाग है जिसकी समुद्र सतह से ऊँचाई 200 मीटर से कम है। दूसरी ओर एशिया का लगभग 60% भाग 200 मीटर से 2000 मीटर के मध्य की ऊँचाई रखता है जबकि शेष 14% भाग 2000 मीटर से अधिक ऊँचाई वाला है।

धरातलीय उच्चावच एवं भौतिक विशेषताओं के आधार पर एशिया महाद्वीप को निम्नलिखित भागों में विभक्त किया गया है:-

1. उत्तर का निचला मैदान (Northern Lowlands)
2. मध्यवर्ती पर्वतीय एवं पठारी श्रेणियां (Central Mountain and Plateaus Ranges)

"Do not say, 'It is morning,' and dismiss it with a name of yesterday.
See it for the first time as a newborn child that has no name." —Rabindranath Tagore

3. नदियों के मैदान (River Plains)
4. दक्षिणी प्रायद्वीपीय पठार (Southern Peninsular plateau)
5. द्वीप समूही मालाएँ (Archipelagoes)

उत्तर का निचला मैदान

उत्तर का निचला मैदान एशिया महाद्वीप के लगभग 20% भाग में सोवियत संघ के साइबेरिया तथा तूरानी निम्न भूमि में विस्तृत है। ट्याम्प महोदय ने इस मैदान को 'उत्तर पश्चिम का बहुत नीची भूमि वाला त्रिभुज' कहा है। त्रिभुजाकार मैदान के उत्तर में उत्तरी ध्रुव महासागर, दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व में एशिया की मध्यवर्ती वलित पर्वतमालाएँ तथा पश्चिम में यूराल पर्वत एवं कैस्पियन सागर की उपस्थिति मिलती है। उत्तर का यह निचला मैदान वास्तव में एक मैदानी भाग नहीं है अपितु इसका अधिकांश भाग एक कटा-फटा निचला पठारी भाग है जो मैदान के रूप में परिवर्तित हो गया है। इस विशाल मैदान को दो विभागों में विभक्त किया जाता है —

(i) साइबेरिया का मैदान (The Siberian Plan)
(ii) तूरानियन निम्न भूमि (The Turanian Lowland)

(i) साइबेरिया का मैदान — उत्तर के निचले मैदान के दक्षिणी-पश्चिमी भाग को छोड़कर शेष मैदानी भाग साइबेरिया के मैदान के रूप में जाना जाता है। इस मैदान का सामान्य ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर है। ओबे (obe) यनीसी (Yenisei) तथा लीना (Lena) इस मैदान में दक्षिण से उत्तर की

और बहने वाली प्रमुख नदियाँ है जो आर्कटिक सागर मे गिरती है। इन नदियो के मुहाने वर्ष के अधिकांश समय बर्फ से ढके रहते है। जिससे इन नदियों के जल प्रवाह मे अवरोध उत्पन्न हो जाता है साथ ही यह नदियाँ अपने साथ लाये अवसादों को ढोने मे भी असमर्थ रहती है। जिसके परिणाम स्वरूप यहाँ की भूमि मे जल अप्रवाह पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और असंख्य दलदलों का निर्माण स्थान-स्थान पर हो जाता है। साइबेरिया मैदान की औसत ऊँचाई 180 मीटर है।

(ii) तूरानियन निम्न भूमि – उत्तर के निचले मैदान का दक्षिण-पश्चिमी भाग तूरानियन निम्न भूमि या तूर्किस्तान के मैदान के रूप मे जाना जाता है। भू-वैज्ञानिकों का विश्वास है कि प्राचीन काल मे यहाँ एक आन्तरिक सागर था जो बाद मे अवसादों से भरकर एक निचले मैदान के रूप मे परिवर्तित हो गया इस सागर के अवशेष आज यहाँ अरब सागर तथा केस्पियन सागर के रूप मे मिलते है। तूरानियन निम्न भूमि मे अरल सागर तथा केस्पियन सागर के मध्य मे उस्त-उर्त (Ust-Urt) का पठार है जिसकी औसत ऊँचाई लगभग 165 मीटर है।

मध्यवर्ती पर्वतीय एवं पठारी क्रम

एशिया महाद्वीप मे मध्यवर्ती पर्वतीय एवं पठारी भाग का विस्तार महाद्वीप के उत्तरी-पूर्वी कोने से लेकर महाद्वीप के पश्चिमी कोने तक हुआ है। यह भौतिक प्रदेश एशिया के लगभग 48 लाख वर्ग किमी क्षेत्रफल मे फैला हुआ है जो एशिया महाद्वीप के कुल क्षेत्रफल का लगभग 17% भाग है।

एशिया महाद्वीप के इस मध्यवर्ती क्रम के पठारों तथा पर्वतों की ऊँचाई 7700 मीटर से 8848 मीटर के मध्य मिलती है। इस पर्वतीय पठारी क्रम का केन्द्र पामीर की गाँठ (Knot of Pamir) है। पामीर की गाँठ एक ऊँचा पठारी भाग है जिसकी औसत ऊँचाई 7400 मीटर है। पामीर की गाँठ इस मध्यवर्ती पर्वतीय एवं पठारी क्रम को निम्नलिखित दो भागों में विभक्त करती है।

(i) पामीर की गाँठ से पश्चिम की ओर का पर्वतीय क्रम

(ii) पामीर की गाँठ से पूर्व की ओर का पर्वतीय क्रम

(i) पामीर की गाँठ से पश्चिम की ओर का पर्वतीय क्रम :- यह पर्वतीय क्रम पामीर की गाँठ से पश्चिम की ओर तुर्की तक विस्तृत है जिसमें निम्नलिखित पर्वतीय क्रम एवं अन्तर्पर्वतीय पठार हैं।

(a) पामीर की गाँठ से पहला पर्वतीय क्रम उत्तर पश्चिम की ओर हिन्दुकुश (Hindukush) पर्वत श्रेणियों तथा एलबुर्ज (Alburz) के रूप में है जो क्रमशः अफगानिस्तान एवं ईरान में विस्तृत है। हिन्दुकुश पर्वत श्रेणी का सर्वोच्च शिखर तिरिच मीर है। जिसकी ऊँचाई 7708 मीटर है। एलबुर्ज पर्वत श्रेणी का सर्वोच्च शिखर माउण्ट देमवन्द है जिसकी समुद्र सतह से ऊँचाई 5658 है। पूर्वी ईरानियन उच्च भूमि तथा ईरान के उत्तरी पूर्वी भाग में कोपेत दाग कहलाती है।

(b) पामीर की गाँठ से दूसरा पर्वतीय क्रम दक्षिण पश्चिम की ओर सुलेमान (Sulaiman) तथा किरथर (Kirthar) पर्वत श्रेणियों के रूप में पाकिस्तान के दक्षिण भाग से होता हुआ जैग्रोस (Zagros) पर्वत श्रेणी के रूप में ईरान के दक्षिणी तथा दक्षिणी पश्चिम भाग तक विस्तृत है। जैग्रोस पर्वत श्रेणी उत्तर पश्चिम की ओर आरमीनिया की गाँठ पर पाकर समाप्त हो जाती है।

(c) एलबुर्ज जैग्रोस तथा पूर्वी ईरानियन उच्च भूमि के मध्य ईरान के मध्यवर्ती पठार का विस्तार है जिसकी औसत ऊँचाई 750 मीटर है।

(d) तुर्की के पूर्वी भाग में पूर्व की ओर से जैग्रोस तथा एलबुर्ज तथा पश्चिम की ओर से पोण्टस एवं टारस पर्वत श्रेणियाँ मिलकर आरमीनिया उच्च भूमि या गाँठ (Armenian Highland or knot) का निर्माण करती है। इसी पर्वतीय उच्च भूमि में तुर्की का सर्वोच्च शिखर माउण्ट अरारात (Mount Ararat) स्थित है जिसकी ऊँचाई 5165 मीटर है।

(e) तुर्की में आरमीनिया उच्च भूमि से पश्चिम की ओर दो पर्वत श्रेणियाँ निकलती हैं। इनमें उत्तर की पर्वत श्रेणी पोन्टस (Pontus) तथा दक्षिण की पर्वत श्रेणी टारस (Taurus) कहलाती है। पोन्टस पर्वत मालाओं की औसत ऊँचाई 1800 से 2100 मीटर के मध्य है। काकेरदाग पोन्टस का सर्वोच्च शिखर है जिसकी ऊँचाई 4168

मीटर है।

(f) पोन्टस, टारस तथा आरमीनिया उच्च भूमि के मध्य मध्यवर्ती पठार या अनातोलिया पठार समूह (Anatolia Plateau) स्थित जिसकी औसत ऊँचाई 750 मीटर है। स्पष्ट है कि पामीर की गाँठ से पश्चिम की ओर भिन्न भिन्न पर्वतीय श्रृंखलाएं हैं।

(a) हिन्दुकुश - एलबुर्ज - आरमीनिया की गाँठ - टारस पर्वत श्रेणियाँ।

(b) सुलेमान - किरथर - जैग्रोस - आरमीनिया की गाँठ - टारस पर्वत श्रेणियाँ।

(ii) पामीर की गाँठ से पूर्व की ओर का पर्वतीय क्रम - पामीर की गाँठ से पूर्व की ओर निम्न चार पर्वतीय क्रम निकलते हैं।

(a) पामीर की गाँठ से दक्षिण पूर्व की ओर एक प्रमुख पर्वतीय क्रम है जिसे हिमालय पर्वत श्रेणी (Himalayas Mountain Ranges) के नाम से जाना जाता है। इस पर्वत श्रेणी का उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर लगभग 2,400 किमी की लम्बाई में विस्तार मिलता है। इस पर्वत श्रेणी के 11 शिखर ऐसे हैं जिनकी ऊँचाई 8,000 मीटर से अधिक है। इनमें माउण्ट एवरेस्ट (8848 m) को विश्व का सर्वोच्च शिखर होने का गौरव प्राप्त है। कंचनजंघा (8598 m), मनासलू (8156 m), ची-ओयू (8153 m), नंगापर्वत (8162 m), तथा अन्नपूर्णा (8078 m) हिमालय श्रेणी के अन्य उल्लेखनीय शिखर हैं।

बाद में हिमालय श्रेणियां भारत के उत्तरी - पूर्वी राज्य अरुणाचल से एकदम दक्षिण की ओर लघु पर्वत के रूप में मुड़ती हुई वर्मा के दक्षिण तक जाती है। पटकोई, अराकानयोमा इनमें प्रमुख पर्वत श्रेणीयां है।

(b) पामीर की गांठ से दूसरा पर्वतीय क्रम पूर्व की ओर कुनलुनशान (Kunlunshan) पर्वत श्रेणी के रूप में मिलता है जो आगे दो भागों में विभक्त हो जाती है। उत्तर की शाखा अल्ताई ताग नानशान - खिंगन पर्वतों के रूप में चीन के उत्तरी - पूर्वी तक विस्तृत है जबकि दक्षिण की शाखा बयानकारा - सिनलिंगशान (Sinlingshan) पर्वत श्रेणियों के रूप में मध्यवर्ती चीन तक विस्तृत है।

(c) कुनलुशान श्रेणी के दक्षिण में पामीर की गांठ से एक छोटी शाखा दक्षिण - पूर्व की ओर निकलती है जिसे काराकोरम (Karakoram) श्रेणी के नाम से जाना जाता है। 8611 मीटर ऊँचाई का गोडविन आस्टिन (Godwin Austen) काराकोरम श्रेणी का सर्वोच्च शिखर है।

(d) पामीर की गांठ से निकलने वाला चौथा पर्वत क्रम उत्तर - पूर्व की ओर तियानशान (Tienshan) पर्वत श्रेणी के रूप में प्रारम्भ होता है। पश्चिम से पूर्व में लगभग 2400 किमी की लम्बाई में विस्तृत तियानशान पर्वत श्रेणी के कई शिखर 7000 मीटर से अधिक ऊँचाई रखते है। इस पर्वत श्रेणी की एक शाखा मंगोलिया के दक्षिण में होती हुई उत्तरी - पूर्वी भाग में महान खिंगन (Greater Khingan) के रूप में विस्तृत है।

तियानशान पर्वत श्रेणी की दूसरी शाखा अल्टाई (Altai), सयान (Sayan), याबलोनोवो (Yablonovo),

"Do not say, 'It is morning,' and dismiss it with a name of yesterday.
See it for the first time as a newborn child that has no name." —Rabindranath Tagore

स्टेनोवोय (Stanovoy), वरखोयान्स्क (Verkhoyansk), चेरेस्की (Chersky), कोलिमा (Kolima), अनादिर (Anadyr) तथा कमचटका (Kamchatka) पर्वत श्रेणियों के रूप में एशिया महाद्वीप के सुदूर पूर्व तक विस्तृत है। स्पष्ट है कि पामीर की गाँठ से पूर्व की ओर भिन्न पाँच पर्वत शृंखलाएँ है -

हिमालय - पटकोई - अराकानयामा पर्वत श्रेणियाँ

(i) काराकोरम पर्वत श्रेणी

(ii) कुन लुशान - क्यानकारा - सिनलिंगशान पर्वत श्रेणियाँ

(iii) कुनलुनशान - नानशान - दिवंगन पर्वत श्रेणियाँ

(iv) तियानशान - अल्टाई - स्यान - याबलोनाय, स्टेनोवोय

(v) वरखोयान्स्क - कोलिमा - अनादिर - कमचटका पर्वत श्रेणियाँ। पामीर की गाँठ से पूर्व की ओर अन्तर्पर्वतीय पठार - एशिया महाद्वीप में पामीर की गाँठ से पूर्व की ओर निम्नलिखित अन्तर्पर्वतीय पठारों की उपस्थिति मिलती है -

(i) तिब्बत का पठार (Tibetan Plateau) कुनलुनशान तथा हिमालय पर्वत श्रेणियों के मध्य तिब्बत का पठार स्थित है जिसकी औसत ऊँचाई 3600 मीटर है।

(ii) सिकयांग का पठार या तारिम बेसिन (Sikiang Plateau of Traim Basin) तियानशान पर्वत श्रेणी तथा कुनलुनशान पर्वत श्रेणी के मध्य एक पठारी भाग मिलता है जिसकी ऊँचाई 500 से 900 मीटर के मध्य है।

(iii) मंगोलियन बेसिन या पठार

(Zungarian Basin or Plateau) -
तियानशान पर्वतश्रेणी तथा अल्ताई पर्वतश्रेणी के मध्य एक निचला पठारी भाग स्थित है। इस पठार की औसत ऊँचाई 300 मीटर है। इसका एक बड़ा भाग दलदली है।

(iv) साइदाम बेसिन (Tasidam Basin) नानशान पर्वतश्रेणियों तथा बयानकारा पर्वतश्रेणियों के मध्य 2700 मीटर ऊँचाई का एक अन्तरप्रवाही बेसिन है जो साइदाम बेसिन के नाम से जाना जाता है।

(v) गोबी का पठार (Gobi Plateau) ज्युगेरियन बेसिन के पूर्व मे महान खिंगन तथा अल्ताई पर्वत श्रेणियों के मध्य 1000 से 1500 मीटर ऊँचाई का गोबी का पठार स्थित है।

नदियों के मैदान
मध्यवर्ती पर्वतीय एवं पठारी क्रम से कई बड़ी-बड़ी नदियाँ निकल कर दक्षिण की ओर बहती है। जहाँ वह कई बड़े-बड़े मैदानों का निर्माण करती हुई दक्षिण मे स्थित महासागरों मे गिर जाती है। यह मैदान कृषि की दृष्टि से उर्वरक तथा प्राचीन सभ्यता तथा संस्कृति के केन्द्र माने जाते है साथ ही एशिया महाद्वीप की लगभग 75% जनसंख्या इन्ही नदियों के मैदानों मे निवास करती है। एशिया महाद्वीप मे मिलने वाले नदियों के मैदानों मे निम्न मैदान उल्लेखनीय है।

(1) दजलाफरात (या मेसोपोटामिया) का मैदान -
यह मैदान दजला और फरात नदियों के मध्य

(इराक देश में) विस्तृत है। इस मैदान का ढाल उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर है इस मैदान के मध्य भाग का ढाल अत्यन्त धीमा है जिसमें यहाँ बाढ़ आती है। सुमेरी, बेबीलोनी तथा असीरी नामक प्राचीन सभ्यताओं का विकास यहीं हुआ था।

(2) सिन्धु गंगा - ब्रह्मपुत्र के मैदान - इस मैदान का निर्माण हिमालय से निकलने वाली तीन मुख्य नदियों - सिन्धु, गंगा, ब्रह्मपुत्र एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा लाए गए अवसादों से हुआ है। पूर्व से पश्चिम यह मैदान 2400 km की लम्बाई में स्थित है। सिन्धु के मैदान का ढाल उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम, गंगा के मैदान का ढाल उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व तथा ब्रह्मपुत्र मैदान का ढाल उत्तर से दक्षिण की ओर मिलता है।

(3) इरावती का मैदान - बर्मा देश में उत्तर से दक्षिण की ओर बहने वाली इरावती नदी के द्वारा बिछाए गए अवसादों से यह मैदान निर्मित है।

द्वीपसमूह मालाएँ :- एशिया महाद्वीप के दक्षिण पूर्व में जावा, सुमात्रा, कालीमंतन तथा फिलीपाइन द्वीप समूह स्थित है जबकि पूर्व में जापान, ताइवान तथा सखालीन द्वीप स्थित है। इन द्वीपों में वलित पर्वतीय श्रेणियों का अस्तित्व मिलता है। तथा तटीय भागों पर संकरे तटीय मैदान मिलते हैं। वास्तव में यह स्थायी

द्वीप समूह हिमालय पूर्वतीय पाप के वह दक्षिणी पूर्वी भाग है जो समुद्र में डूबने से बच गए। वर्तमान में इन द्वीपों पर पायतु एवं मृत ज्वाला मुखीयों का अस्तित्व मिलता है।

(4) मीनाम का मैदान - थाइलैंड देश में उत्तर से दक्षिण की ओर बहने वाली मीनाम नदी द्वारा बिछाये गये अवसादों से बना है।

(5) मीकांग का मैदान - यह एक संकरा मैदान है जो हिन्द चीन प्रायद्वीप पर मीकांग नदी द्वारा बिछाए गए अवसादों से बना है।

(6) सीक्यांग मैदान - चीन के सुदूर दक्षिणी भाग में पश्चिम से पूर्व और सीक्यांग नदी द्वारा एक संकरा मैदान निर्मित होता है।

(7) यांगटिसीक्यांग मैदान - यांगटिसीक्यांग नदी तथा उसकी सहायक नदियों द्वारा बिछाये गये अवसादों से मध्य चीन में यह मैदान निर्मित होता है।

दक्षिण महाद्वीप पठार

एशिया महाद्वीप के दक्षिणी भाग में प्राचीनतम चट्टानों से निर्मित निम्नांकित 6 प्रमुख प्रायद्वीपीय पठार स्थित है।

1) अरब का प्रायद्वीपीय पठार - यह प्रायद्वीपीय पठार एशिया के दक्षिणी पश्चिमी भाग में स्थित है जिसका ढाल दक्षिणी पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर है। इस पठार की औसत ऊँचाई 1800 मीटर है।

जलवायु की शुष्कता के कारण यह पठारी भाग रेतीला मरुस्थलीय भाग है। दक्षिणी पश्चिमी भागों में यह पठारी भाग यमन उच्च भूमि के रूप में मिलता है जिसकी औसत ऊँचाई 2400 मीटर है। यहाँ झीलों तथा सदावाहिनी नदियों का अभाव है केवल दक्षिणी पश्चिमी भाग में छोटी-छोटी जलधाराएँ अवश्य हैं।

(2) भारत का प्रायद्वीपीय पठार – भारत का दक्षिणी प्रायद्वीपीय भाग एक पठारी भाग के रूप में है। यह एक त्रिभुज के आकार का पठार है जिसके पूर्व और पश्चिम में पर्वतीय श्रेणियाँ हैं। इस पठारी की औसत ऊँचाई 1200 मीटर है। इस पठार का सामान्य ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है। कृष्णा, कावेरी, महानदी, गोदावरी आदि नदियों द्वारा यह पठार जगह-जगह काट दिया गया है।

(3) हिन्द चीन का पठार – दक्षिणी पूर्वी एशिया में हिन्द चीन का प्रायद्वीपीय भाग कठोर चट्टानों द्वारा निर्मित है, जिसकी औसत ऊँचाई 1200 मीटर है। सालविन, मीकांग, मिनाम आदि नदियों ने इस पठार को जगह-जगह कटा-फटा बना दिया है। इस पठार का सामान्य ढाल उत्तर से दक्षिण की ओर है।

अपवाह तंत्र (Drainage System)

किसी भी क्षेत्र की धरातलीय आकृतियाँ उस

क्षेत्र के अपवाह तंत्र के स्वरूप को निर्धारित करती है। साथ ही अपवाह तंत्र भी धरातलीय आकृतियों के स्वरूप को प्रभावित करता है। एशिया महाद्वीप में मिलने वाले धरातलीय स्वरूपों के अनुरूप ही यहाँ के अपवाह तंत्र का विकास हुआ है। एशिया महाद्वीप के मध्यवर्ती भागों में उच्च पर्वतीय एवं पठारी भागों का अस्तित्व मिलता है। इसी उच्च प्रदेश से निकलकर उत्तर पूर्व दक्षिण दिशा में सैकड़ों नदियाँ बहती हैं और क्रमशः आर्कटिक प्रशान्त तथा हिन्द महासागर में प्रमुख रूपों से गिरते हैं। वस्तुतः एशिया महाद्वीप के अपवाह प्रतिरूप का निर्धारण यहाँ की भव्य भूमियों के द्वारा किया जाता है इस आधार पर हम इसे निम्नांकित अपवाह क्षेत्रों में विभक्त कर सकते हैं।

1. आर्कटिक महासागरीय अपवाह क्षेत्र (Arctic Ocean Drainage System)
2. प्रशान्त महासागरीय अपवाह क्षेत्र (Pacific Ocean Drainage System)
3. हिन्द महासागरीय अपवाह क्षेत्र (Indian Ocean Drainage System)
4. भूमध्य सागरीय अपवाह क्षेत्र (Mediterranean Sea Drainage System)
5. आन्तरिक अपवाह क्षेत्र (Inland Drainage System)

आर्कटिक महासागरीय अपवाह क्षेत्र -

इस अपवाह क्षेत्र का विस्तार एशिया के उत्तरी भाग में स्थित उत्तर के निचले मैदान में मिलता है। एशिया के मध्यवर्ती पर्वतीय क्रम से निकल कर दक्षिण से उत्तर की ओर बहने वाली नदियाँ इस अपवाह में सम्मिलित हैं। इन नदियों में ओबे (Obe), यनीस (Yenisei) लीना (Leena) सर्व प्रमुख नदियाँ हैं। जिनकी लम्बाई क्रमशः 5410 km, 4092 km है। ओबे नदी का नदी बेसिन 29.75 लाख वर्ग km, यनीसी नदी का नदी बेसिन 24.90 लाख वर्ग km क्षेत्रफल में विस्तृत है। दिवीना (Divina) पिचोरा (Pichora), याना (Yana) इन्दीगिरीका (Indigirica) तथा कोलिमा (Kolima) इस अपवाह क्षेत्र की अन्य महत्वपूर्ण नदियाँ हैं। यह सभी नदियाँ दक्षिण से उत्तर की ओर बहती हुई आर्कटिक महासागर में गिर जाती हैं। इन नदियों के ऊपरी तथा मध्यवर्ती भागों में बर्फ पिघल जाती है लेकिन इन नदियों के मुहाने उस समय हिमाच्छादित रहते हैं। जिसे इन नदियों के ऊपरी तथा मध्यवर्ती भागों का जल इर्दगिर्द फैलाकर दलदली भागों का निर्माण करता है।

ओबे, यनीसी तथा लीना विश्व की लम्बी नदियों में से हैं जो एशिया के मध्यवर्ती पर्वतीय भाग से निकलती

हुई वृक्षाभ अपवाह (Dendritic Drainage) के साथ उत्तर की ओर बहती है।
ग्रीष्मकाल में इस अपवाह तन्त्र की अधिकांश नदियों का प्रयोग नावों व स्टीमरों द्वारा प्रमुख परिवहन मार्गों के रूप में होता है जबकि शीतकाल में स्लेज (Sleighs) सड़क के रूप में इन नदियों का प्रयोग किया जाता है।

प्रशान्त महासागरीय अपवाह क्षेत्र
यह अपवाह क्षेत्र एशिया महाद्वीप के पूर्वी भाग पर विस्तृत है इसमें साइबेरिया का पूर्वी भाग चीन तथा हिन्द चीन सम्मिलित है। इस अपवाह क्षेत्र की प्रमुख नदियाँ आमुर (4416 km) ह्वांगहो (4845 km) यांगटिसिकियांग (5520 km) सिकियांग (2655 km) मीकांग (4500 km) तथा मीनाम अधिकांश नदियाँ एशिया के मध्यवर्ती पर्वतीय भागों से निकलकर पूर्व की ओर बहती हुई प्रशान्त महासागर में गिरती है। लेकिन मीनाम तथा मीकांग नदी का प्रवाह उत्तर से दक्षिण की ओर मिलता है। ह्वांगहो अपनी सहायक नदियों के साथ जालीनुमा (Trellis) अपवाह निर्मित करती है जबकि यांगटिसीकियांग नदी अपनी सहायक नदियों के साथ वृक्षाभ अपवाह (Dendritic Drainage) बनाती है।
शांतुंग प्रायद्वीप के दक्षिण में यालूमियांग नदी है नदियाँ, ह्वांगहो तथा

अन्य नदियाँ है। अधिकांश नदियां सतत वाहिनी है। क्योंकि इन नदी क्षेत्रों मे पर्याप्त वर्षा होती है अतः यह नदियाँ प्रायः वर्षाकाल मे बाढ़ग्रस्त हो जाती है।

हिन्द महासागरीय अपवाह क्षेत्र
इस अपवाह का विस्तार दक्षिणी एशिया मे मध्यवर्ती पर्वतीय पठारी क्रम मे स्थित है। इस अपवाह तन्त्र मे पूर्व की ओर सालविन (2820 km) सिवांग तथा इरावती नदियाँ स्थित है। मध्यवर्ती भाग मे गंगा (2700 km) ब्रह्मपुत्र (2960 km) सिन्धु (3190 km) नर्मदा तथा महानदी प्रमुख नदियाँ है। जबकि इस अपवाह तन्त्र के पश्चिम की ओर दजला (1850 km) तथा फरात 2760 km) नदियाँ बंगाल की खाड़ी मे, सिन्धु, नर्मदा तथा ताप्ती अरब सागर मे तथा दजला फारस की खाड़ी अपना जल डालती है।

दक्षिणी प्रायद्वीप मे बहने वाली नदियों के उद्गम स्थल मध्यवर्ती पर्वतीय पठारी क्रम पर न होकर प्रायद्वीप के उच्च भागों पर है। यह नदियाँ संकरी तथा गहरी घाटियों मे बहती है। सिन्धु, ब्रह्मपुत्र तथा दक्षिण भारत की नदियों का अपवाह पूर्ववर्ती (Antecedent Drainage) है, जबकि हिन्द महासागरोन्मुख अपवाह क्षेत्र की अधिकांश बड़ी नदियाँ अपनी सहायक नदियों के साथ वृक्षाभ अपवाह की रचना करती है।

हिन्द महासागरीय अपवाह क्षेत्र मे बहने वाली उक्त सभी नदियाँ सततवाहिनी है तथा सिंचाई व जल परिवहन की दृष्टि से अधिकांश नदियाँ महत्वपूर्ण है।

भूमध्यसागरीय अपवाह क्षेत्र
इस अपवाह क्षेत्र का विस्तार एशिया महाद्वीप के सुदूर पश्चिमी भागो मे मिलता है। इस प्रवाह क्षेत्र के अन्तर्गत अधिकांश तुर्की (आन्तरिक अपवाह वाले अनातोलिया पठार को छोड़कर) लीवेन्ट उच्च भूमि एवं उसके पश्चिमी भूमध्यसागरीय तटवर्ती क्षेत्र सम्मिलित है। अनातोलिया पठार के उत्तरी भागो पोन्टस पर्वत मालाओं सहित काला सागर के समस्त तटवर्ती क्षेत्र का जल काला सागर मे गिरता है। चूंकि काला सागर का सम्बन्ध मारमारा सागर होकर भूमध्यसागर से है। यही कारण है कि काला सागरोन्मुख जल प्रवाह क्षेत्र को भी भूमध्यसागरोन्मुख जल प्रवाह क्षेत्र मे सम्मिलित कर दिया गया है। पोन्टस पर्वतमालाओं का ढाल उत्तर की ओर है जबकि आरमीनिया उच्च भूमि पर यह ढाल दक्षिण-पूर्व की ओर हो जाता है। यही कारण है कि पोन्टस पर्वतमालाओं से निकलने वाली सभी नदियाँ उत्तर की ओर बहती हुई काला सागर मे गिर जाती है। इन नदियों में किजिल इरमाक (Kizil Irmak) सबसे बड़ी नदी है जिसकी लम्बाई पर्वत श्रेणियों मे होकर बहने वाली अन्य नदियों मे सकारया (Sakarya), यीसील आदि प्रमुख है।

"Do not say, 'It is morning,' and dismiss it with a name of yesterday.
See it for the first time as a newborn child that has no name." —Rabindranath Tagore

अधिक वर्षा वाले क्षेत्र में बहने तथा उच्च वर्षाच्छादित शिखरों से निकलने के कारण यह नदियाँ सतत वाहिनी हैं।

दूसरी ओर पश्चिम अनातोलिया पठार, टारस पर्वत श्रेणियों तथा लीबेन्ट उच्च भूमि से निकलने वाली अधिकांश जलधारायें अपना जल सीधा भूमध्यसागर में गिरती हैं। अनातोलिया पठार के पश्चिमी भाग में तथा टारस पर्वत श्रेणियों में मेन्डेरिस (Menderes), गोडिज (Gediz), ब्यूक (Buyuk), दालमन (Dalaman), सेहान (Seyhan) तथा जेहान (Ceyhan) नदियाँ प्रमुख हैं। जबकि लीबेन्ट उच्च भूमि से लितानी (Litani) (उत्तर से दक्षिण की ओर बहती हुई) तथा ओरन्टस (Orontes) (दक्षिण से उत्तर की ओर बहती हुई) नदियाँ निकलकर भूमध्यसागर में गिरती हैं।

आन्तरिक अपवाह क्षेत्र

इस अपवाह क्षेत्र का विस्तार एशिया के मध्य में अनातोलिया के पठार, ईरान, कैस्पियन निम्न भूमि, तिब्बत तथा सिकयांग से होता हुआ उत्तरी मंगोलिया तक विस्तृत है। यह क्षेत्र तूरानी निम्न भूमि और मध्यवर्ती पठारों पर स्थित है लेकिन अधिकांश आन्तरिक जल अपवाह क्षेत्र मध्यवर्ती भागों के मध्य में स्थित पठारी भागों पर है। यह पठारी भाग इन भागों की अधिकांश छोटी-छोटी नदियाँ या तो इन भागों में स्थित झीलों में

गिरती है या फिर मरुस्थलीय भागों में जाकर विलुप्त हो जाती है। इस क्षेत्र की प्रमुख नदियाँ आमू नदियाँ (लम्बाई 2620 km) तथा सर दरिया है, जो अरल-के स्पियन - तूरानी निम्न भूमि में स्थित अरल सागर में गिरती है। इली नदी बालकाश (Ballehash) झील में तारिम तथा खोतान नदियाँ लोपनोर (Lopnor) झील में गिरती है। उत्तरी मंगोलिया के पठार पर मासगोल तथा कुलीन, सिक्यांग के पठार पर इजीकुल तथा टेले जकोई तिब्बत के पठार पर दारू, पालटी, कोकोनोर घलारिंग, चरोल, इकेनोमूर तथा हौराया प्रमुख खारे पानी की झीलें हैं जिनमें निकटवर्ती स्थलों का जल इकट्ठा होता रहता है।

एशिया की जलवायु

एशिया की जलवायु में 3 प्रधान विशेषताएँ हैं।

1. शीतकाल में बाहर की ओर जाने वाली शुष्क हवाएँ।

2. ग्रीष्मकाल में भीतर की ओर आने वाली आर्द्र हवाएँ।

3. एशिया की प्राकृतिक बनावट का प्रभावशाली प्रभुत्व।

एशिया को निम्नलिखित 10 जलवायु प्रदेशों में विभक्त किया गया है।

(1) भूमध्य रेखीय जलवायु (2) उष्ण मानसूनी जलवायु (3) चीन तुल्य जलवायु अथवा गर्म शीतोष्ण पूर्वी समुद्र तटीय जलवायु (4) मंचूरिया तुल्य जलवायु अथवा शीत शीतोष्ण पूर्वी समुद्र जलवायु (5) उष्ण मरुस्थलीय जलवायु (6) मध्य अक्षांशीय मरुस्थलीय जलवायु (7) भूमध्य सागरीय जलवायु (8) मध्य अक्षांशीय महाद्वीपीय अथवा मध्य अक्षांशीय घास के मैदान तुल्य जलवायु (9) शीत शीतोष्ण जलवायु अथवा उत्तरी कोणधारी वनों की जलवायु (10) आर्कटिक मरुस्थलीय जलवायु अथवा टुण्ड्रा तुल्य जलवायु।

भूमध्यरेखीय जलवायु (Equatorial climate)

इस प्रकार की जलवायु 5° उत्तरी तथा 5° दक्षिणी अक्षांशों के मध्य पाई जाती है। यह जलवायु मलेशिया, इण्डोनेशिया तथा श्रीलंका में पाई जाती है। वर्ष के औसत तापमान 26°c से 27°c के मध्य मिलते हैं। वार्षिक तापान्तर 1° से 3° सेंग्रे के मध्य दैनिक तापान्तर का औसत 6° सेंग्रे से 10° सेंग्रे के बीच रहता है। वर्षा प्रायः तीसरे पहर में बिजली की चमक तथा बादलों की गड़गड़ाहट के साथ होती है। वर्षा वर्ष के प्रत्येक माह में होती है तथा कोई शुष्क मौसम नहीं होता है।

भूमध्यसागरीय प्रदेशों की स्थिति शान्त क्षेत्र में है इसलिए वर्षा प्रमुख रूप से संवाहनिय होती है। इन प्रदेशों में

सापेक्षिक आर्द्रता वर्ष भर उच्च रहती है। सापेक्षिक आर्द्रता का वार्षिक औसत 80% है।

उष्ण कटिबंधीय मानसूनी जलवायु
(Sub Tropical Monsoon Climate)

यह जलवायु भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, बर्मा, हिन्द चीन तथा दक्षिणी चीन से मिलती है। उष्ण कटिबंधीय मानसूनी प्रदेश में हवाएँ शीत ऋतु में स्थल से समुद्र की ओर तथा ग्रीष्म ऋतु में समुद्र से स्थल की ओर चला करती है। वर्षा के आधार पर यहाँ तीन मौसम मिलते हैं।